फोटो साभार: बेन कैस्नोचा

शुरू कीजिए अपनी हाई-टेक कंपनी

बेन कैस्नोचा

कम उम्र होना कारोबारी सफलता में बाधा नहीं

जूनियर हाईस्कूल में मेरे एक शिक्षक थे जो मुझे प्रौद्योगिकी पढ़ाते थे। वह मुझ पर एप्पल कंप्यूटर टेलीविज़न का एक विज्ञापन याद करने के लिए बहुत ज़ोर डालते थे। विज्ञापन था 'कुछ हट कर सोचो।' विज्ञापन की आखिरी लाइन कुछ यों थी: 'जिन लोगों में दुनिया को बदल देने का जुनून होता है, वे दुनिया को बदल देते हैं।' मुझे इस विज्ञापन और इसके बारे में बताने वाले मेरे शिक्षक दोनों से प्रेरणा मिली। मुझे लगा, दुनिया बदलने के लिए मुझे अपनी कंपनी शुरू कर देनी चाहिए।

लेकिन कैसी कंपनी? मुझे कोई बढ़िया विचार चाहिए था। जब मैं उस विज्ञापन को याद कर रहा था तो उन्हीं दिनों मैंने सैन फ्रांसिस्को, कैलिफ़ोर्निया में एक व्यावसायिक फुटबाल मैच देखा। वहां स्टेडियम की सीटें बहुत गंदी थीं। मैं उनके बारे में शहर के प्रशासन से शिकायत करना चाहता था। जब मैंने अपनी शिकायत दर्ज़ कराने की कोशिश की तो पता लगा कि नागरिकों की समस्याओं को हल करने का कोई कारगर तरीका नहीं है। निराश होकर मैंने अपने-आप से कहा, 'इसका कोई अच्छा तरीका होना ही चाहिए!'

अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मैंने इस समस्या के समाधान के लिए एक हाई-टेक कंपनी शुरू की। मैंने स्थानीय सरकार की ग्राहक सेवा को सुधारने के लिए 2001 में अपनी कंपनी 'कॉमकेट' की नींव डाली। मैंने ऐसा सॉफ़्टवेयर बनाया जिससे कोई भी शहर नागरिकों की शिकायतों का पता लगा कर, उन पर कार्रवाई करके समस्या का समाधान कर सकता है। उदाहरण के लिए, स्थानीय सरकार के ग्राहक सड़क के गड्ढों, टूटी हुई स्ट्रीट लाइट, सड़क पर गिरे वृक्षों के तने और लोगों की ऐसी ही दूसरी शिकायतों का आसानी से पता लगा सकते हैं। इस तरह लोगों की शिकायतें दूर होने के साथ-साथ स्वयमेव शिकायतों का पता लगने के कारण सरकारी धन की भी बचत होती है। मैं पिछले तमाम वर्षों से इस कारोबार को आगे बढ़ा रहा हूं।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

बेन कैस्नोचा का ब्लॉग
http://ben.casnocha.com/

लघु व्यवसाय प्लानर
http://www.sba.gov/smallbusinessplanner/index.html

विशेष भी, सामान्य भी

मेरी उद्यमी बनने की यह कोशिश एक तरह से बहुत विशेष है। पहली बात तो यह है कि मुझे इसका विचार अपने ही अनुभव से आया। बढ़िया विचार अक्सर ऑफिस की मंथन बैठकों के बजाय ऐसे ही व्यक्तिगत अनुभवों से आते हैं।

दूसरी बात यह है कि मैंने सफलता और असफलता दोनों का ही स्वाद चखा है। लोग ठीक ही कहते हैं, कंपनी शुरू करना बड़ी हिम्मत का काम है। इसमें सदा संशय बना रहता है और हर दिन उतार-चढ़ाव तथा सौभाग्य व दुर्भाग्य लेकर आता है। अपनी कंपनी के लिए गलत कर्मचारी लेने का जो खामियाजा मुझे भुगतना पड़ा, वह अब भी याद है। कंपनी के लिए चुस्त-दुरुस्त आदमी न चुन पाने पर समय और धन दोनों की बर्बादी हुई। सफल उद्यमियों में ऐसी कठिन परिस्थितियों का सामना करने की भावनात्मक क्षमता होती है।

तीसरी बात, संपर्क बनाए रखने यानी नए लोगों से मिलते रहना दिन भर का एक बड़ा काम होता है। मैं हर रोज एक घंटा यह सोचने में बिताता हूं कि मैं किस-किस को जानता हूं और कैसे उनसे संपर्क बनाए रख सकता हूं। और, यह भी कि और किससे मिल सकता हूं। वे बिक्री से जुड़े हो सकते हैं या परामर्शदाता हो सकते हैं। जो भी हो, मेरी व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता में नेटवर्किंग का बड़ा हाथ रहा है।

दूसरी ओर, मेरा अनुभव ऐसा कोई विशेष भी नहीं कहा जा सकता। मैं युवा हूं। कंपनी मैंने 14 वर्ष की उम्र में शुरू की। अब मैं 20 वर्ष का हूं। मुझे अपनी आयु से संबंधित समस्याओं को भी हल करना पड़ा। मुझे लोगों को समझाना पड़ा कि मेरी बात को वे गंभीरता से लें और नकारात्मक सोच वाले लोगों की बात न सुनें। मुझे कारोबार के व्यावहारिक पहलुओं को मुख्य रूप से अपने ही बूते पर समझने की ज़रुरत थी कि कैसे किसी समस्या को देखूं, कैसे उसका समाधान किया जाए और प्रोटोटाइप बनाकर उसे कैसे बेचा जाए। मेरे व्यावसायिक संबंध बहुत कम थे और उन्हीं के सहारे अपने परामर्शदाताओं तथा समर्थकों का नेटवर्क बनाना था। मेरे लिए अपने काम का संतुलन भी बनाए रखना था यानी स्कूल भी जाना था और कंपनी को भी आगे बढ़ाना था।

इसमें मुझे अपनी युवावस्था का लाभ मिला। कभी-कभी कई चीजें न जानने का भी फायदा मिलता है क्योंकि आप 'अबोध सवाल' पूछते हैं। अनुभव की कमी के कारण मेरे पूर्वाग्रह कम थे और मैं किसी भी समस्या पर बिलकुल नए ढंग से विचार कर सकता था।

अमेरिकी नीति और संस्कृति

सौभाग्य से जब मैं किसी बच्चे की तरह अपने कारोबार पर विचार कर रहा था, तब अमेरिका में पल-बढ़ रहा था। यहां उद्यमिता के लिए उद्यमियों को सरकार की नीतियों का भी काफी फायदा मिलता है और उद्यमिता की जमी-जमाई संस्कृति का भी।

अमेरिकी सरकार कंपनी शुरू करना बहुत आसान बना देती है। इस काम के लिए बहुत कम कागजी औपचारिकताएं पूरी करनी पड़ती हैं। अमेरिका में इस बुनियादी बात पर विश्वास किया जाता है कि निजी उद्यमियों को अपना जो भी कारोबार है, उसे आगे बढ़ाने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा आज़ादी दी जानी चाहिए। कारोबार शुरू करने के लिए बहुत कम कागजी कार्रवाई की ज़रुरत पड़ती है। कड़े सरकारी नियम और लंबी कागजी औपचारिकताएं उद्यमी के रचनात्मक सोच का दम घोट देती हैं। इसलिए इसे दूर ही रखना चाहिए। इसलिए सरकार छोटे उद्यमियों को टैक्स में छूट देती है और शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए वित्तीय सहायता मुहैया कराती है। सरकार निजी उद्यम की शक्ति में पूरा विश्वास रखती है।

अमेरिकी नीति पुलिस तथा अग्नि सुरक्षा जैसी आपातकालीन सेवाएं मुहैया कराने के अलावा राष्ट्रीयकरण की बात सोचने के बजाय खुले बाज़ार में प्रतिस्पर्धा का समर्थन करती है। साथ ही अमेरिका में नए और युवा उद्यमियों का स्वागत किया जाता है।

उद्यमिता की सफलता में सांस्कृतिक प्रवृत्ति का और भी बड़ा हाथ है। अगर आप कारोबार शुरू करने की हिम्मत दिखाते हैं तो दाद देने के साथ ही आपको बढ़ावा भी दिया जाता है। आपको नवोन्मेषी, अग्रणी और सफल प्रतियोगी माना जाता है। और, अगर आप असफल हो गए-अपना कारोबार शुरू करने में ऐसा हो भी सकता है- तो अधिकांश अमेरिकी इस पर ध्यान न देकर कहेंगे कि इससे आपको सीखने का सुअवसर मिल गया। असफल होने में किस बात की शर्म। असफलता के बारे में परिवार, स्कूल और मीडिया सब यही विचार रखते हैं।

एक मायने में, अमेरिका में आप हर बार एक नई शुरुआत करते हैं। युवाओं को विशेष रूप से नए और रचनात्मक विचारों का प्रकाश स्तंभ माना जाता है। एक महत्वाकांक्षी युवा उद्यमी के रूप में मुझे इन बातों का लाभ मिला। मुझे अपने-आप पर गर्व हुआ और मैंने अपने विचारों पर बिना किसी परेशानी के काम शुरू कर दिया।

सफलता का कोई एक रास्ता नहीं

जो देश उद्यमिता को बढ़ावा देते हैं, वे आर्थिक रूप से अधिक सफल होते हैं। अर्थशास्त्री विलियम बॉमॉल उद्यमिता को अमेरिका की प्रगति और समृद्धि का 'अनिवार्य हिस्सा' मानते हैं। वहां एक करोड़ साठ लाख लोग ऐसे कारोबारों में काम कर रहे हैं जिनमें 10 से भी कम कर्मचारी हैं। सच ही है, अमेरिका का आधार छोटा कारोबार है।

सैन फ्रांसिस्को, कैलिफ़ोर्निया में कॉमकेट दफ़्तर के बाहर बेन कैस्नोचा।

उद्यमिता के महत्व को पहचानने वाला अमेरिका अकेला देश नहीं है। चीन, भारत और अन्य भी छोटे कारोबार का महत्व बखूबी जानते हैं और इसीलिए वे समृद्धि की ओर आगे बढ़ रहे हैं। इनमें से प्रत्येक देश के उद्यमियों की अपनी-अपनी सोच अलग हो सकती है। उद्यमिता की सफलता का कोई एक रास्ता नहीं है। बल्कि यह तो व्यक्ति यानी आप पर निर्भर करता है।

अमेरिका में बेहद सफल उद्यमी भी अलग-अलग तरह के होते हैं। अमेरिका की सबसे शक्तिशाली प्रौद्योगिकी कंपनियों में शुमार गूगल का सहयोगी संस्थापक एक तेज़ दिमाग का रूसी आप्रवासी था। उसने मीडिया की अधिक परवाह नहीं की। अमेरिका के एक उत्कृष्ट विश्वविद्यालय से कंप्यूटर विज्ञान में पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की। इस बात का अध्ययन किया कि गणितीय सूत्रों से कैसे सर्च इंजन बेहतर परिणाम दे सकता है। इसी तरह एक और शक्तिशाली प्रौद्योगिकी कंपनी ऑरैकल की नींव कॉलेज के एक ड्रॉपआउट छात्र ने डाली जिसने अपनी कंपनी को आगे बढ़ाने के लिए बिक्री की प्रतिस्पर्धात्मक रणनीति अपनाई। अब वह मीडिया में छा चुका है। सभी अमेरिकी उद्यमी जमीन-जायदाद के शहंशाह डोनाल्ड ट्रंप के तौर-तरीके नहीं अपनाते। बहुत कम ऐसा करते हैं। बल्कि, सफल कारोबारी अपना रास्ता खुद बनाते हैं।

अधिक से अधिक लोग अपना रास्ता चुन रहे हैं और वे अपने-आप में उद्यमिता की ललक भी देख रहे हैं। असल में अमेरिका में लोग उद्यमिता का स्वर्णकाल अनुभव कर रहे हैं। विशेष रूप से युवाओं यानी मेरी पीढ़ी के लोगों के लिए कारोबार शुरू करने का ऐसा शानदार मौका शायद पहले कभी नहीं मिला था। कॉलेजों के अधिकांश ग्रेजुएट बताते हैं कि वे कभी न कभी अपना कारोबार शुरू करने का विचार रखते हैं।

अमेरिका में यह मौलिक विश्वास है कि निजी उद्यमियों को अपने कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए ज़रूरी मसलों में अधिकतम स्वतंत्रता दी जानी चाहिए।

समय आ गया है

अपना भाग्य स्वयं लिखने का यह जोश केवल अमेरिका तक सीमित नहीं है। दुनिया भर में युवा ही नहीं, बुजुर्ग भी नया कारोबार शुरू करने का रोमांच अनुभव कर रहे हैं। आप भले ही विश्व के ऐसे इलाके में रहते हों जो परंपरागत रूप से अमेरिका की तरह लोकतांत्रिक न हो अथवा जहां असफलता या नए प्रयोग को पसंद न किया जाता हो या जहां अब तक निजी पूंजी बाजार न बन पाए हों, फिर भी कारोबार शुरू करने का इससे बेहतर समय पहले कभी नहीं था। इंटरनेट के कारण आपकी व्यक्तिगत उपस्थिति उतनी ज़रूरी नहीं रही। आप जांबिया से न्यूजीलैंड या कनाडा से कोस्टारिका तक इंटरनेट पर कहीं भी लॉग ऑन कर सकते हैं और समान विचार वाले लोगों से जुड़ सकते हैं। ज़्यादातर, वेब ब्राउजर खोलते ही उद्यमिता की राह भी खुल जाती है।

इसलिए, आइए, वैश्विक उद्यमिता समुदाय में शामिल हो जाइए। अपना हाई-टेक कारोबार शुरू कीजिए। अपने ज्ञान और अनुभव को बांटिए। अपनी कहानी दूसरों को सुनाइए। ज़्यादा से ज़्यादा यही होगा न कि आप असफल हो जाएंगे। और अगर सफलता आपके कदम चूमती है तो आप दुनिया बदल सकते हैं, किसी भी समस्या को हल कर सकते हैं और हो सकता है खूब धन कमा सकते हैं। तो फिर, किस बात का इंतज़ार है?

बेन कैस्नोचा माइ स्टार्ट-अप लाइफ: व्हाट ए (वेरी) यंग सीईओ लर्न्ड ऑन हिज जर्नी थ्रू सिलिकॉन वैली *पुस्तक के लेखक हैं।*